भोले दानी रे भोले दानी | By Lakhbir Singh Lakha |

दिन और दुखियों के तुम हो सहारे,
सदा अपने भक्तों को भोले उबारे।
भस्म भभूति तन पर राजे,
नाग गले में डाले,
पिते हो नित भांग के भर-भर,
भोले जी तुम प्याले।

भोले दानी, रे भोले दानी,
भोले दानी भोले दानी,
भोले निराला,
पिए सदा भंगिया का प्याला,
हे काले काले, रे काले काले,
काले काले सर्पों की माला को,
अपने गले में है डाला,
जो चाहे मांगो, जो चाहे लेलो,
हिरा मोती सोना चाँदी,
सब देने वाला।

भोले बाबा जी के सब हैं पुजारी,
नर हो या नारी ये सब संसारी,
दर के भिखारी रे,
सारे भक्तों के हितकारी,
त्रिशूल धारी भोले भंडारी,
नंदी वाले नाग धारी,
अब तक किसी को भी करके निराशा,
उसने कभी अपने दर से ना टाला।

सबसे बड़े जग में है वही ज्ञानी,
भोले वरदानी त्रिशूल पानी,
शिव औघड़ दानी को,
गाते हैं सब जिनकी वाणी,
ये जग के प्राणी पंडित और ज्ञानी,
राजा रानी जोगी ध्यानी,
जपता सदा है लख्खा जिनकी माला,
कहलाता है जो शिव डमरू वाला

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%ad%e0%a5%8b%e0%a4%b2%e0%a5%87-%e0%a4%a6%e0%a4%be%e0%a4%a8%e0%a5%80-%e0%a4%b0%e0%a5%87-%e0%a4%ad%e0%a5%8b%e0%a4%b2%e0%a5%87-%e0%a4%a6%e0%a4%be%e0%a4%a8%e0%a5%80-by-lakhbir-singh-lakha/